सूर्यदेव के कार्य की स्तुति कर रहे हैं, जिसने करोड़ों वर्ष पूर्व उन्हीं से यह विद्या सीखी थी। भगवान् श्रीकृष्ण के इस प्रकार के सब शिष्यों को यहाँ पूर्व में होने वाले मुक्तपुरुष कहा गया है, जो श्रीकृष्ण की आज्ञा रूपी कर्तव्य के पालन में तत्पर रहे। भाव यह है कि अर्जुन भी सूर्यदेव आदि महानुभावों का अनुगमन करता हुआ कृष्णभावनाभावित कर्म करे।

किं कर्म किमकर्मेति कवयोऽप्यत्र मोहिताः।
तत्ते कर्म प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात्।।१६।।

किम्=क्या है; **कर्म**=कर्म; **किम्**=क्या है; **अकर्म**=अकर्म है; **इति**=इस; **कवयः**=बुद्धिमान्; **अपि**=भी; **अत्र**=इस विषय में; **मोहिताः**=मोहित हो जाते हैं; **तत्**=उस; **ते**=तेरे प्रति; **कर्म**=कर्म तत्त्व का; **प्रवक्ष्यामि**=वर्णन करूँगा; **यत्**=जिसे; **ज्ञात्वा**=जानकर; **मोक्ष्यसे**=मुक्त हो जायगा; **अशुभात्**=दुर्भाग्य (संसारबन्धन) से।

अनुवाद

कर्म क्या है और अकर्म क्या है, इस प्रकार निर्णय करने में बुद्धिमान् भी मोहित हैं। इसलिए मैं तेरे लिए उस कर्मतत्त्व का वर्णन करूँगा, जिसे जान कर तू सम्पूर्ण पापों से मुक्त हो जायगा।।१६।।

तात्पर्य

कृष्णभावनाभावित कर्म पूर्ववर्ती शुद्धभक्तों के आदर्श के अनुसार ही करना है। पन्द्रहवें श्लोक में यही निर्देश है। स्वेच्छामय कर्म का निषेध क्यों है, यह अगले श्लोक में स्पष्ट किया जायगा।

कृष्णभावनाभावित कर्म करने के लिए उन प्रामाणिक पुरुषों का अनुगमन करना आवश्यक है, जो शिष्यपरम्परा में हों, जैसा अध्याय के आदि में कहा गया है। कृष्णभावनामृत रूपी धर्म का उपदेश सर्वप्रथम सूर्यदेव को किया गया। सूर्यदेव ने उसी ज्ञानामृत को अपने पुत्र मनु को दिया और मनु ने अपने पुत्र इक्ष्वाकु को हृदयंगम कराया। इस प्रकार यह व्यवस्था चिरन्तन काल से पृथ्वी पर विद्यमान है। अतः परम्परा के पूर्ववर्ती आचार्यों के चरणचिन्हों की अनुगति आवश्यक है। अन्यथा, चाहे कोई मूर्धन्य मनीषी ही क्यों न हो, उसे भी कृष्णभावनाभावित आदर्श कर्म के विषय में भ्रम हो जायगा। अतएव श्रीभगवान् ने अर्जुन को कृष्णभावनामृत में स्वयं शिक्षित करने का निश्चय किया। अर्जुन को साक्षात् भगवत्-शिक्षा प्राप्त हुई; इसलिए इसमें सन्देह नहीं कि जो कोई भी अर्जुन का अनुगमन करेगा, वह कभी मोहित नहीं होगा।

कहा जाता है कि दोषपूर्ण प्रायोगिक ज्ञान से धर्मपथ का निर्णय नहीं किया जा सकता। वस्तुतः धर्म की रचना स्वयं श्रीभगवान् ही कर सकते हैं। **धर्मं हि साक्षात्भगवत्प्रणीतम्।** दोषमय मनोधर्म के द्वारा कोई धर्म का निर्माण नहीं कर सकता। इसके स्थान पर ब्रह्मा, शिव, नारद, मनु, कुमार, कपिल, प्रह्लाद, भीष्म, शुकदेव गोस्वामी, यमराज, जनक आदि महाजनों का अनुसरण करना कल्याणकारी